अहलूवालिया मिसल

शरद चन्द आनन्द*

सारांशः

अहलूवालिया मिसल सिख मिसलों की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस मिसल की स्थापना जस्सा सिंह अहलूवालिया ने किया था। सिखों के इतिहास में मिसलों की एक उल्लेखनीय भूमिका है। इन मिसलों में अहलूवालिया मिसल का नाम बहुत ही आदर एवं सम्मान से लिया जाता है। सिखों की राजनीतिक शक्ति की स्थापना में सभी मिसलों का अपना–अपना योगदान है। अहलूवालिया मिसल ने सिख साम्राज्य की स्थापना के क्रम में अफगानों एवं मुगलों तथा स्थानीय शासकों से लोहा लेते हुए सिखों की शक्ति को मजबूत किया और सिख संप्रभु साम्राज्य की स्थापना में अपना योगदान दिया।

मुख्य शब्दः सिख, पंथ, मिसल, साम्राज्य, दल, खालसा, अफगान, जत्था, बैसाखी, अमृतसर, स्वर्ण मन्दिर इत्यादि।

प्रस्तावनाः

अहलूवालिया मिसल के जस्सा सिंह अहलूवालिया ने नवाब कपूर सिंह के बाद सिखों को संगठित करने और सिख पंथ का विस्तार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अहलूवालिया मिसल के माध्यम से उन्होनें न सिर्फ अफगानों, मुगलों और स्थानीय शासकों से लोहा लिया अपितु छोटी–बड़ी रियासते कायम कर सिख साम्राज्य की अवधारणा का विस्तार किया। यह मिसल बड़ा घल्लूघारा (बड़ा नरसंहार) का साक्षी बना। इसी मिसल के मिसलदारा जस्सा सिंह अहलूवालिया ने लाहौर पर कब्जा कर स्वयं को वहां का शासक धोषित किया। जो कि सिख इतिहास के नजरिये से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य् एवं तथ्यः

अठारहवी सदी के सिखों के इतिहास पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो मिसलो का महत्व का उभर कर सामने आता है। जिसमें प्रारम्भिक तौर पर बड़ी उपलब्धियां अर्जित करने का श्रेय अहलूवालिया मिसल को जाता है। इस शोध पत्र में मिसलों की एक कड़ी के रूप में अहलूवालिया मिसल की भूमिका और उसके स्वरूप तथा सिख साम्राज्य की स्थापना में इस मिसल के योगदान एवं मिसलदार के रूप में जस्सा सिंह अहलूवालिया के योगदान पर संक्षिप्त चर्चा की गयी है।

अहलू एक छोटा सा गाँव था, जो कि लाहौर से 20 किमी0 दक्षिण–पूर्व की ओर स्थित था। वहां बदर सिंह नाम का कलाल जाति का एक व्यक्ति रहता था। उसने करीब के ही गाँव हल्लो साधो के बाघू की बहन से विवाह किया था। बाघू, बाघ सिंह के नाम से सिख बना था। बदर सिंह के घर 1718 में एक पुत्र पैदा हुआ, जिसका नाम जस्सा सिंह रखा गया।[1] जब जस्सा सिंह पांच वर्ष के थे, उसी समय बदर सिंह की मृत्यु हो गयी। बदर सिंह की विधवा अपने पुत्र को लेकर दिल्ली चली आयी, जहाँ गुरू गोविन्द सिंह की पत्नी माता सुन्दरी रहती थी। जस्सा सिंह और उनकी माता कुछ समय तक दिल्ली में रहीं। जब जस्सा सिंह सात वर्ष के थे तो उनके मामा बाघ सिंह (जिनकी कोई संतान नही थी) ने माता सुन्दरी से अनुरोध कर जस्सा सिंह और उनकी माता को अपने घर ले आये। कपूर सिंह सिंहपुरिया एक बार बाघ सिंह के घर गये और जस्सा सिंह को देखकर उन्होंने उसे पंथ के कार्य के लिए मांगा। उन्होंने जस्सा सिंह को अपने अनुयायियों के घोड़ों के लिए अनाज पहुँचाने का कार्य सौपा।[2]

* **शोधार्थी, इतिहास विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर**

बहुत जल्द ही जस्सा सिंह नवाब कपूर सिंह का विश्वासपात्र बन गया और दल खालसा में उनका दाहिना हाथ बन कर उभरा। जस्सा सिंह ने भारत पर 1739 में आक्रमण कर लूट के माल के साथ अपने मुल्क वापसी करते नादिर शाह को लूटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसने पंजाब के मुगल गवर्नर जकारिया खान, याहिया खान और मीर मन्नू के खिलाफ सिख संघर्ष के एक निर्णायक लड़ाई की शुरूआत की।[3]

जस्सा सिंह के ही नेतृत्व में 29 मार्च, 1748 को अमृतसर में रामरौनी किले की नींव रखी गयी और वहीं से सिखों का अदीना बेग के नेतृत्व में मीर मन्नू की सेना के खिलाफ हुंकार भरी गयी। 1748 में जस्सा सिंह ने अमृतसर के गवर्नर सलाबत खान को मारकर जिले के एक बड़े भाग पर कब्जा कर लिया। 1756 में जस्सा सिंह ने अस्थायी तौर पर लाहौर पर कब्जा कर लिया। उन्होंने सरहिन्द के खिलाफ सिखों का नेतृत्व किया और मराठों के सहयोग से 1758 में सरहिन्द और लाहौर पर अधिकार कर लिया। यह वही समय था जब पंजाब व्यवहारतः पूर्णतः विदेशी अधिपत्य से मुक्त हो गया था और सिख स्वयं को भारत में सतलुज के दोनो ओर उत्तर एवं दक्षिण में स्थापित कर रहे थे।[4]

जस्सा सिंह ने इससे पहले 1749 में दीवान खौरामल की मदद लाहौर के पूर्व सूबेदार शाहनवाज को निष्कासित करने में तथा मुल्तान पर कब्जा करने एवं शाहनवाज को मारने में सहयोग कर अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर चुका था।[5] अहमद शाह अब्दाली ने 1759 में पुनः अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उसने 1761 में मराठों को पराजित किया। अहमद शाह की मराठों के विरूद्ध संलिप्तता को देखते हुए जस्सा सिंह ने सरहिन्द और दयालपुर, सतलुज के दक्षिण भाग पर कब्जा कर लिया और बाद में आधा भाग करतारपुर के सोधियों को दे दिया।[6]

मराठों को पराजित कर अहमदशाह जब वापसी में सिन्धु नदी पार कर रहा था तभी जस्सा सिंह और हरी सिंह भंगी ने शहर में लूट–पाट आरम्भ कर दिया। अधिकतर अफगान फौजदार जिन्होंने शहर में महत्वपूर्ण ओहदे हासिल किये थे, भाग खड़े हुए। लाहौर के गवर्नर ख्वाजा उबेद खान जस्सा सिंह अहलूवालिया, सुकेरचकिया और भंगी सरदारों द्वारा बुरी तरह पराजित हुआ।[7] सिखों ने लाहौर शहर में नागरिकों के सहयोग से प्रवेश किया। सिखों ने जस्सा सिंह को सुलतान–उल–कयूम की पदवी के साथ लाहौर का बादशाह घोषित किया। नवम्बर 1761 में लाहौर में सिखों ने अपनी पहली मुद्रा जारी की, जिस पर अंकित था –

सिक्का जद दर जहान बा फजले अकाल,
मुल्के अहमद गिरफ्त जस्सा कलाल।

जिसका तात्पर्य था, उपर वाले की कृपा से जस्सा कलाल ने अहमद के देश पर कब्जा कर लिया और उसके वर्चस्व को तोड़ दिया।[8]

जनवरी 1762 में जस्सा सिंह ने सरहिन्द के खिलाफ दल खालसा का नेतृत्व करने का निर्णय लिया। परन्तु सरहिन्द पर आक्रमण करने से पहले जस्सा सिंह ने मलेरकोटला के नवाब को सबक सिखाना चाहा, जो कि सरहिन्द का बहुत बड़ा सहयोगी था। दल खालसा ने मलेरकोटला से 9 किमी0 उत्तर कुप में डेरा डाल दिया। बिना कोई दुश्मन की गतिविधियों की जानकारी और सूचना प्राप्त किये, वे अहमदशाह की पंजाब में मौजूदगी से पूर्णता अनभिज्ञ थे। 05 फरवरी, 1762 को प्रातः काल अहमदशाह ने सरहिन्द और मलेरकोटला की संयुक्त सेनाओं के साथ सिखों पर अचानक आक्रमण कर दिया। अधिकतर सिख गहरी निद्रा में सोये हुए थे। इस युद्ध में सिखों को 25,000 लोगों से हाथ धोना पड़ा।

बाकी बचे सिख बरनाला और हिसार की जंगलों की ओर पलायन कर गये। सिख इतिहास में इसे बड़ा धल्लूधारा के नाम से जाना जाता है।[9]

अब्दाली के वापस चले जाने के बाद 1763 में जस्सा सिंह के नेतृत्व में सिखों ने एक बड़ी सेना एकत्र कर सरहिन्द पर आक्रमण कर दिया और सरहिन्द के गवर्नर जईन खान और उसके सहयोगियों को मार डाला तथा सरहिन्द को खालसा द्वारा बुरी तरह लूटा गया। 1764 के अंत तक लाहौर पर भी सिखों का अधिकार हो गया।[10] अहमदशाह अब्दाली के जाने के बाद सिख पंजाब के स्वामी हो गये।

इसके पश्चात जस्सा सिंह ने वापस लौटकर स्वर्ण मन्दिर का पुनः निर्माण कराया। जिसे अहमदशाह अब्दाली ने बारूदों से जर्जर कर दिया था और पवित्र सरोवर को गन्दा कर दिया था।[11] उन्होंने 1780 में राय इब्राहिम से कपूरथला छीनकर उसे अपना मुख्यालय बनाया। 22 अक्टूबर, 1783 को अमृतसर में जस्सा सिंह की 65 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी। स्वर्ण मन्दिर में ही उनकी याद में एक स्मारक का निर्माण किया गया। जो पंथ के प्रति उनके समर्पण का प्रतीक है।[12] जस्सा सिंह एक बहादुर और सही मायनों में सहिष्णु योद्धा थे, जिन्होंने सिखों के गौरव के साथ–साथ पंथ के गौरव को भी प्रतिष्ठा प्रदान की।

जस्सा सिंह का कोई पुत्र नही था। उनके बाद उनका चचेरा भाई भाग सिंह मिसल का मुखिया बना। वह किसी नये क्षेत्र पर अधिपत्य नहीं जमा सका, लेकिन अधिकतर समय वह विरोधियों से युद्ध में व्यस्त रहा। 1801 में उनकी मृत्यु हो गयी। इसके बाद उनके पुत्र फतेह सिंह मिसल के सरदार बने। वह एक योग्य और महान सेनानायक थे। रणजीत सिंह ने उनकी योग्यता से प्रभावित होकर उनसे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये। फतेह सिंह का शासन उनके जीवन में रणजीत सिंह से जुड़ा रहा। अपने जीवन के आखरी पन्द्रह–सोलह साल उन्होंने शांतिपूर्वक कपूरथला में व्यतीत किया।[13] जहाँ अक्टूबर 1837 में उनकी मृत्यु हो गयी।[14] उनके बाद उनका पुत्र निहाल सिंह मिसल का उत्तराधिकारी बना, जिसने लम्बे समय तक कपूरथला रियासत पर राज्य किया।[15] वर्तमान में यह रियासत पंजाब सूबे का एक महत्वपूर्ण जिला है।

निष्कर्ष

विश्लेषण स्वरूप हम कह सकते हैं कि सिखों को राजनीतिक शक्तियों का स्वामी बनाने में मिसलों का महत्वपूर्ण योगदान है। जिसमें अहलूवालिया मिसल एवं जस्सा सिंह अहलूवालिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसका यह तात्पर्य कदापि नही है कि अन्य मिसलों का योगदान एवं उनकी भूमिका सीमित है। परन्तु प्रारम्भिक स्तर पर सिखों को संगठित करने एवं सत्ता का रसास्वादन कराने का श्रेय अहलूवालिया मिसल एवं जस्सा सिंह अहलूवालिया को ही जाता है। जिसके मिसलदारी में सिखों ने लाहौर की बादशाही हासिल की। अहलूवालिया मिसल द्वारा रखी गयी इसी नींव पर आगे चलकर संपूर्ण पंजाब में सिख राजसत्ता की स्थापना की गयी।

संदर्भ :

1 गुप्ता, हरीराम – हिस्ट्री आफ द सिख्स, भाग–4, नई दिल्ली–2014, पृ0 – 24

2 रामजस – त्वारीख–ए–रियासत कपूरथला, भाग–1, 1897, पृ0 – 100–02

3 सिंह, भगत – अ हिस्ट्री आफ सिख मिसल, पटियाला–1993, पृ0 – 57,

4 सिंह, गण्डा – पटियाला एण्ड ईस्ट पंजाब यूनियन, हिस्टोरिकल बैकग्राउण्ड, पृ0–74

5 सिंह कृपाल एवं सिंह खड़क (संपा0) – हिस्ट्री आफ द सिख्स एण्ड दियर रिलीजन, भाग–2, अमृतसर, अक्टूबर 2013, पृ0 – 19

6 जिला गजेटियर कपूरथला – 1904, पृ0 – 4

7 सिन्हा, एन0के0 – राइज आफ सिख पावर, कलकत्ता, 1936, पृ0 – 11–12

8 सिंह, भगत – अ हिस्ट्री आफ सिख मिसल, पृ0 70, (यद्यपि जस्सा सिंह द्वारा सिक्के जारी करने को लेकर विद्वानों में मतैक्य है)

9 गुप्ता, हरीराम – हिस्ट्री आफ द सिख्स, भाग–4, नई दिल्ली–2014, पृ0 – 29–30

10 सिंह, गण्डा – पटियाला एण्ड ईस्ट पंजाब स्टेटस यूनियन, पृ0 – 74

11 सिंह, फौजा – द सिटी आफ अमृतसर, नई दिल्ली, 1978, पृ0 – 305–06,

12 अरोरा, अंजु – प्रिंसली स्टेटस, (1858–1948), नई दिल्ली, 2001, पृ0 – 05

13 गांधी, सुरजीत सिंह – सिख इन द एट्टीन्थ सेन्चुरी, अमृतसर, 1999, पृ0 – 404

14 गुप्ता, हरीराम – हिस्ट्री आफ द सिख्स, भाग–4, पृ0 – 48

15 गांधी, सुरजीत सिंह – सिख इन द एट्टीन्थ सेन्चुरी, पृ0 – 404